प्रथम अध्याय
भारतीय उपमहाद्वीप : विभाजन और विस्थापन

पृथ्वी सर्वप्रथम आग का गोला थी जैसे-जैसे पृथ्वी ठंडी हुई, यह दो भागों में विभाजित हुई। सम्पूर्ण पृथ्वी का एक भाग स्थलमंडल तथा दूसरा भाग जलमंडल कहलाया। स्थलमंडल का विशाल एकीकृत भाग संयुक्त रूप से 'पेंजिया' कहलाया तथा एक विशाल महासागर जो पेंजिया को चारों ओर से घेरे हुए था, तदनुसार उसका नाम 'पैन्थालासा' रखा गया। स्थलमंडल के विखंडन से यह दो भागों में बंट गया, जिसे कालांतर में 'अन्गारालैंड' कहा गया तथा दूसरे भाग को 'गोंडवाना लैंड' के नाम से जाना जाता है। इस प्रकार स्थलमंडल से महाद्वीपों तथा जलमंडल से महासागरों की उत्पत्ति हुई।

"पेंजिया का विभाजन कार्बनिफरस युग से प्रारम्भ होता है। गुरुत्व तथा ज्वलनशीलता के बल के कारण पेंजिया का दो भागों में विभाजन हो गया। उत्तरी भाग लारेशिया तथा दक्षिणी भाग गोंडवाना लैंड कहलाया। बीच का भाग 'टेथिस सागर' के रूप में बदल गया। इसे टेथिस का खुलना कहा जाता है। जुरैसिक युग में गोंडवाना लैंड का विभाजन हो गया तथा ज्वारीय बल के कारण प्रायद्वीपीय भारत, मैडागास्कर, आस्ट्रेलिया तथा अंटार्कटिका, गोंडवाना लैंड से अलग होकर प्रवाहित हो गए। इसी समय उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका ज्वारीय बल के कारण पश्चिम की ओर प्रवाहित हो गए। प्रायद्वीपीय भारत के उत्तर की ओर प्रवाहित होने के कारण हिन्द महासागर का निर्माण हुआ। दोनों अमेरिका के पश्चिम की ओर प्रवाहित होने के कारण अंध महासागर का निर्माण हुआ। स्थल भाग समान गति से प्रवाहित नहीं हो रहे थे। अंध महासागर का रूप उत्तर तथा दक्षिण अमेरिका के पश्चिम दिशा में विभिन्न गति से प्रवाह के कारण संभव हुआ। दोनों अमेरिका के पश्चिम दिशा की ओर प्रवाह के कारण ही मध्य अटलांटिक महासागर का निर्माण हुआ। आर्कटिक सागर तथा उत्तरी ध्रुव सागर का निर्माण महाद्वीपों के उत्तरी ध्रुव से हटने के कारण

हुआ। पैन्थालासा पर कई दिशाओं से महाद्वीपों के अतिक्रमण के कारण उसका आकार संकुचित हो गया तथा उसका अवशिष्ट भाग प्रशांत महासागर बना। इस तरह स्थल तथा जल का वर्तमान रूप प्लायोसीन युग तक पूर्ण हो गया था।"[1]

इस प्रकार सम्पूर्ण पृथ्वी महाद्वीपों एवं महासागरों का योग है। पृथ्वी की भूपर्पति भाग 71 प्रतिशत तथा महासागरों का भू-भाग 29 प्रतिशत महाद्वीपों से घिरा हुआ है। वर्तमान स्थिति में धरातल पर महाद्वीपों एवं महासागरों का रूप जो दृष्टिगोचर हो रहा है, ऐसी अवस्था पूर्व में नहीं थी। अनेक विद्वानों ने इनकी उत्पत्ति, विकास तथा विस्तार के सम्बन्ध में अपने अलग-अलग मत प्रस्तुत किये हैं।

'जर्मन विद्वान् अल्फ्रेड वेगनर' ने 1912 ई. में 'महाद्वीपीय प्रवाह सिद्धांत' का प्रतिपादन किया था। वेगनर ने पूर्व जलवायु शाखा, वनस्पति शाखा और भू-गर्भ शास्त्र के प्रमाणों के आधार पर यह माना कि कार्बोनिफरस युग में विश्व के समस्त भूखंड पेंजिया में तीन परतें-सियाल, सीमा और निफे हैं, जो महाद्वीपीय भाग थे। 'सियाल' हलके तत्वों से बने होने के कारण 'सीमा' (महासागरीय तली) पर तैर रहे थे। कालांतर में पैंजिया के दोनों भागों का विखंडन हुआ और भू-खण्डों में दो भिन्न-भिन्न दिशाओं में प्रवाह उत्पन्न हुआ। यह प्रवाह दो प्रकार के बलों द्वारा हुआ –

क. उत्तर की ओर या भूमध्य रेखा की ओर प्रवाह

ख. पश्चिम दिशा में प्रवास

विश्व के महाद्वीपीय भूगोल के क्रिटेशियस युग में अन्गारालैंड के टूटने के कारण 'उत्तरी अमेरिका', यूरोप' तथा 'एशिया' बना तथा गोंडवाना लैंड के विभाजन के फलस्वरूप 'दक्षिणी अमेरिका' 'अफ्रीका' 'प्रायद्वीपीय भारत' मेडागास्कर तथा आस्ट्रेलिया का निर्माण हुआ।

"बीसवीं सदी के दौरान, भूविज्ञानिको ने 'लेट विव' सिद्धांत को स्वीकार किया है जिसके अनुसार महाद्वीप पृथ्वी की ऊपरी सतह पर सरकते हैं, जिसे 'कॉन्टिनेंटल ड्रिफ्ट' कहते है। पृथ्वी की सतह पर सात बड़े और कई छोटे 'टेक्टानिक प्लेट' होते हैं और यही टेक्टोनिक प्लेटलेट्स एक दूसरे से दूर होते हैं, टूट कर अलग होते हैं, जो समय बीतते 'महाद्वीप' बन जाते हैं।"[2].

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पृथ्वी के जो सात सबसे ठोस सतह के टुकड़े हैं, उन्हें महाद्वीप कहा गया है। इन्हीं ठोस सतहों को अलग-अलग नाम दिया गया है-एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया।

एशिया: एक भौगोलिक इकाई

एशिया या जम्बुद्वीप जनसंख्या और आकार दोनों ही दृष्टि से विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप है। इसमें पृथ्वी के कुल भू-भाग के क्षेत्रफल का 8.8 प्रतिशत हिस्सा और सबसे समुद्र से जुड़ा भाग 62,800 किलोमीटर का है। एशिया महाद्वीप की प्राकृतिक बनावट अपने ढंग की अनोखी प्रतीत होती है, वृहद् आकार के कारण विषम प्राकृतिक संरचना से भी यह महाद्वीप सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। संसार की सर्वाधिक बड़ी नदियाँ एशिया महाद्वीप में प्रवाहित होती हैं, इसके अधिकांश भाग में साधारण जलप्रवाह प्रणाली विकसित है।

जलवायु एवं प्राकृतिक वनस्पति की अत्यधिक विविधता, विषमता तथा वृहद् विस्तार के कारण एशिया महाद्वीप में अनेक तरह के अवशेष, जीव-जंतु पाए जाते हैं।

"विश्व के सात महाद्वीपों की अपनी भिन्न-भिन्न विशेषतायें हैं। एशिया एक महाद्वीप है, जिसमे कई देश शामिल हैं। एशिया पृथ्वी पर सबसे बड़ा महाद्वीप है और यह उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है। पश्चिम में इसकी सीमाएँ यूरोप से मिलती हैं। एशिया और यूरोप महाद्वीप को मिलाकर कभी-कभी यूरेशिया भी कहा

जाता है। यूरोप महाद्वीप और एशिया महाद्वीप प्राकृतिक रूप से भिन्न होने के कारण अलग मानते हैं। एशियाई महाद्वीप भूमध्य सागर, अंध महासागर, आर्कटिक महासागर, प्रशांत महासागर और हिन्द महासागर से घिरा हुआ है। चीन और भारत विश्व के दो सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश एशिया महाद्वीप में स्थित हैं। एशिया को 'सभ्यता का पालना' तथा सभी धर्मों की जन्मस्थली भी कहा जाता है।

सबसे प्राचीन मानव सभ्यताओं में जैसे भारतीय सभ्यता या चीनी सभ्यता इत्यादि का जन्म भी इसी महाद्वीप में हुआ था। "वर्तमान समय में 14,50,80000 वर्ग किलोमीटर विश्व का कुल क्षेत्रफल है जिसमे एशिया महाद्वीप का क्षेत्रफल 4,40,30,200 वर्ग किलोमीटर है अर्थात सम्पूर्ण विश्व के क्षेत्रफल का लगभग 30 प्रतिशत एशिया भूखंड में है।"[3]

प्रो. कोर्लिश के अनुसार- "जब यूरोप महाद्वीप के निवासी असभ्य थे, तब एशिया के निवासी विकास की अवस्था में थे। लेकिन आज एशिया महाद्वीप अनेक राजनीतिक समस्याओं से घिरा हुआ है। एशिया महाद्वीप के दक्षिण-पश्चिमी एवं दक्षिण-पूर्वी भागों में स्थित देश राजनैतिक विस्फोटों के शिकार पर बैठे हुए हैं।"[4]

एशिया महाद्वीप की प्राचीनतम संस्कृति, सभ्यता तथा ज्ञान-विज्ञान की अभ्युदित स्थिति को देखकर एवं इस महाद्वीप में बढती हुई मानव शक्ति एवं सुरक्षित प्राकृतिक तथा आर्थिक संसाधनों के आधार पर हम एशिया महाद्वीप की भविष्य और विकास की संभावनाओं को भली-भांति समझते हैं। यह महाद्वीप कृषि उत्पादन की बाहुल्यता, खनिज पदार्थ, उद्योग, जलवायु, निर्माण उद्योग आदि से विकसित माना जाता था। विश्व की आधुनिक जागृति इस बात का द्योतक है कि विश्व का सबसे विकसित महाद्वीप एशिया औद्योगिक उत्पादन की दृष्टि से बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है।

'एशिया' शब्द की उत्पति 'हिब्बू' भाषा के शब्द से हुई जिसका अर्थ 'उगता हुआ सूर्य है। एशिया महाद्वीप में कुल पचास देश शामिल हैं जिनमें से सबसे बड़ा देश रूस और सबसे छोटा देश है मालदीव।

एशिया महाद्वीप, पश्चिमी एशिया, मध्य एशिया, दक्षिणी एशिया आदि भागों में बंटा हुआ हैं। दक्षिण-एशिया में आठ देश शामिल हैं, जिनमें भारत, पाकिस्तान, भूटान, नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका और मालदीव देश आते हैं।"[5]

भारतीय उपमहाद्वीप

भारतीय उपमहाद्वीप, एशिया महाद्वीप के दक्षिणी भाग में स्थित एक उपमहाद्वीप हैं । इस उपमहाद्वीप को दक्षिण एशिया भी कहा जाता है। भू-वैज्ञानिक दृष्टि से भारतीय उपमहाद्वीप का अधिकांश भाग भारतीय प्लेट पर विद्यमान है। भारतीय उपमहाद्वीप को अधिकांशतः 'हिन्द महाद्वीप' भी कहते हैं। इस उपमहाद्वीप में विशेषतः भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, अफगानिस्तान व मालदीव देशों को प्रायः सम्मिलित किया जाता हैं।

"भौगोलिक रूप से भारतीय उपमहाद्वीप एक प्रायद्वीपीय क्षेत्र से जाना जाता है जो दक्षिण मध्य एशिया में स्थित है। इस क्षेत्र में सम्मिलित सभी सातों देशों का कुल क्षेत्रफल 44 लाख वर्ग किलोमीटर है, जो एशियाई महाद्वीप का लगभग 9 प्रतिशत या विश्व के भूमि क्षेत्रफल का 2.4 प्रतिशत है। कुल मिलाकर एशिया के 34 प्रतिशत लोग निवास करते हैं और यहाँ बड़ी संख्या में विभिन्न जनसमूहों के लोग रहते हैं।"[6]

ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार,- 'उपमहाद्वीप' शब्द एक महाद्वीप के उपखंड को दर्शाता है जिसकी एक अलग भौगोलिक, राजनैतिक या सांस्कृतिक पहचान है और महाद्वीप से कुछ हद तक बड़ा भूमि द्रव्यमान भी है।"[7]

'भारतीय उपमहाद्वीप भारतीय प्लेट पर स्थित है और यह हिमालय से लेकर हिन्द महासागर के दक्षिण की ओर तक मिली हुई है। हिमालय के दक्षिण में एशिया का वह भाग जो अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के मध्य हिन्द महासागर में फैला एक प्रायद्वीप बनता है । एतिहासिक दृष्टि से ग्रेटर भारत के पूरे

क्षेत्र का निर्माण करते हुए, यह क्षेत्र अब भारत बांग्लादेश और पाकिस्तान नामक तीन देशों में विभाजित है। इतिहासकार बी. एन. मुखर्जी के अनुसार "उपमहाद्वीप एक अभिभाज्य भौगोलिक इकाई है । भारतीय उपमहाद्वीप पर चर्चा करने वाले भारतीय विश्लेषक अपने विश्लेषण में इन तीन देशों भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश की व्याख्या करते हुए इन देशों की ऐतिहासिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत को ध्यान में अवश्य रखना चाहते हैं। हमारे समाज में 'उपमहाद्वीप' शब्द का प्रयोग न्यूनतम होता है।

"भारत देश का विस्तार उपमहाद्वीप में बहुत विशाल होने के कारण भारतीय उपमहाद्वीप के नाम से जाना जाता है। भारत के उत्तर दिशा में हिमालय, पूर्व दिशा में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम दिशा में अंध महासागर और दक्षिण दिशा में हिन्द महासागर है। भारत के अंडमान-निकोबार एवं लक्षदीप को छोड़कर शेष भूप्रदेश भौगोलिक दृष्टि से अखंडित हैं । भारतीय इतिहास के विकास क्रम पर विचार करें तो निम्नलिखित भूप्रदेश महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

क. हिमालय

ख. सिन्धु गंगा- ब्रह्मपुत्र नदियों का मैदानी भाग

ग. थार का मरुस्थल

घ. समुद्री तटों का प्रदेश

ङ. समुद्र में स्थित द्वीप

भौगोलिक दृष्टि से भारतीय समाज और संस्कृति में निरन्तर एकता पायी जाती है, इन विशेषताओं के कारण ही भारत को विविधतायुक्त समाज कहा जा सकता है। भारत में व्याप्त विभिन्नताओं को कई रूपों में देख सकते हैं- सजातीय, नृजातिकी, धार्मिक विभिन्नतायें, भाषा संबंधी विभिन्नतायें, क्षेत्रीय विभिन्नतायें, सांस्कृतिक विभिन्नतायें, प्रजातीय विभिन्नतायें, जन्सख्यात्मक विभिन्नतायें, जलवायु संबंधी विषमतायें, जातीय विभिन्नता, जनजातीय विभिन्नता तथा अभिजात एवं जनसाधारण आदि।"[8]

अंग्रेजों के भारत आने से पूर्व भारत कृषि प्रधान एवं आत्मनिर्भर था। भारत में ब्रिटिश द्वारा उपनिवेशवाद की शुरूआत होती है। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से ही अंग्रेजी शासन से स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु संघर्ष प्रारंभ होता है। भारतीयों की फूट तथा विघटनकारी स्थितियों के कारण अठाहरवीं शताब्दी में भारत पर अंग्रेजों का आधिपत्य स्थापित हो गया। भारत के इतिहास में यह पहली घटना थी, जिसके प्रशासन और भाग्य-निर्णय की डोर एक ऐसे शासक के हाथ में थी, जो स्वयं अपनी जन्मभूमि से सैकड़ों मील दूर अवस्थित था।

इतिहास के निर्माण में भौगोलिक विशेषताओं का प्रमुख योगदान माना जाता है। आदिमानव के जीवन स्तर, तकनीकी विज्ञान के परिसर में हुए परिवर्तन, पाषाण संस्कृति से लेकर नदी तट की कृषि प्रधान संस्कृति एवं मानवीय संस्कृति की एतिहासिक यात्रा में घटित सभी प्रकार की भूतकालीन घटनाओं के क्रमबद्ध तथ्यों की प्रस्तुति, जो इतिहास के चार प्रमुख आधार स्तम्भ, स्थान, काल, व्यक्ति और समाज का सम्बन्ध भौगोलिक परिस्थतियों से सम्बंधित है। भौगोलिक परिस्थितियों का इतिहास पर विभिन्न प्रकार से प्रभाव पड़ता है। हम जिस प्रदेश में रहते हैं, उस प्रदेश की वर्षा, खेती की उपज, प्राणियों में पायी जाने वाली विविधता, जलवायु आदि हमारे जीवन के साधन होते हैं और उन्हीं के आधार पर उस प्रदेश की जीवन प्रणाली व संस्कृति विकसित होती रहती है।

पं. जवाहर लाल नेहरु ने अपनी पुस्तक 'भारत की खोज' में कहा है- "पुस्तकों, प्राचीन स्मारकों और विगत सांस्कृतिक उपलब्धियों ने यद्यपि मुझमें एक हद तक भारत की समझ पैदा की, लेकिन मुझे उनसे संताप नहीं हुआ, न ही मुझे वे उत्तर दे सकीं जिसकी तलाश मैं कर रहा था। वर्तमान मेरे लिए और मुझ जैसे बहुत से और लोगों के लिए, भयंकर गरीबी, और दुर्गति और मध्य वर्ग की कठिनाइयों का विचित्र मिश्रण है।"[9]

भारतीय समाज तथा संस्कृति में अन्य तरह की विभिन्नताओं के बावजूद भी इसमें एकता का भाव विद्यमान है। भारत की एकता के सन्दर्भ में 'सर हर्बर्ट रिजले' ने कहा है- "भारत में धर्म रीति-रिवाज और भाषा तथा सामाजिक और भौतिक विभिन्नताओं के होते हुए भी जीवन की एक विशेष एकरूपता कन्याकुमारी से लेकर हिमालय तक देखी जा सकती हैं।"[10]

सी.ई. एम. जोड़ का मानना है- "जो भी कारण हो, विचारों तथा जातियों के अनेक तत्वों में समन्वय अनेकता में एकता उत्पन्न करने की भारतीयों की क्षमता एवं तत्परता ही मानव जाति के लिए इनकी विशिष्टता को दर्शाती हैं।"[11]

जवाहर लाल नेहरु ने लिखा है- "इस्लाम को हिंदुस्तान में एक मजहबी और राजनीतिक शक्ल में आकर बहुत से नए मसले खड़ा करना था, लेकिन यह बात ध्यान में रखने की आवश्यकता है कि हिन्दुस्तानी परिस्थितियों में फर्क ले आने में उसे बहुत जमाना लग गया। हिंदुस्तान के बीच उसे पहुँचने में करीब छः सदियाँ लग गयीं और जब वह वहाँ राजनीतिक विजयों के साथ पहुंचा, उस वक्त यह खुद बहुत बदल चुका था और इसके अलमबरदार दूसरे ही लोग थे।"[12]

भारतीय उपमहाद्वीप में आमतौर पर भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश सम्मिलित किये जाते हैं। भारत भौगोलिक दृष्टि से विश्व का सातवाँ बड़ा देश है। भारत के पश्चिम में पाकिस्तान, उत्तर पूर्व में ची, नेपाल और भूटान पूर्व में बांग्लादेश और म्यांमार स्थित है। उत्तर मध्यकालीन युग में धीरे-धीरे ब्रिटिश ईस्ट-इंडिया कंपनी के शासन का विस्तार हुआ, जिसने भारत को औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में बदल दिया। ब्रिटिश राज शासन 1858 ई. में शुरू हुआ और धीरे-धीरे एक प्रभावशाली राष्ट्रवादी आन्दोलन शुरू हुआ। यह अहिंसक विरोध के लिए जाना जाता है। 'फूट डालो और राज करो' की नीति ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा रखी गयी आधारशिला थी, जो भारतीय भूमि से उठने वाले जन आन्दोलन की सम्भावना को अपनी तरफ से बढ़ावा दे रहे थे। ब्रिटिश साम्राज्य पहले इस नीति का प्रयोग धर्म को आधार बनाकर नहीं, बल्कि एक

वर्ग को दूसरे वर्ग के खिलाफ शत्रुता का भाव पैदा करने वाली नीति पर अमल किया। इस प्रकार 19 वीं सदी के बीतते-बीतते देश में विभिन्न तरह की अभूतपूर्व स्थितियां बन गयी थी, जो राष्ट्रीय आन्दोलन हेतु अनिवार्य रूप से आवश्यक थी।

'एक आन्दोलन के मूल तत्व ये हैं: राजनीतिक उद्देश्य, कार्यक्रम और विचारधारा, राजनीतिक संघर्ष की रणनीति, तरीके और तकनीक, सामाजिक आधार और वर्ग अथवा सामाजिक चरित्र। इन्हीं तत्वों के सन्दर्भ में भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की निरंतरता और परिवर्तन की सीमा और चरित्र का पता लगाया जा सकता है, और लगाया गया है। हालांकि इन तत्वों के मध्य हमेशा विभाजन नहीं किया जा सकता और कभी-कभी वे एक दूसरे से मिल भी जाते हैं। इन तत्वों में से प्रथम तत्व-राजनीतिक उद्देश्य, कार्यक्रम और विचारधारा के तत्व-चर्चा का विषय नहीं बनाया जाता। इसे संक्षेप में केवल यह संकेत देने के लिए प्रयोग किया जाता है कि प्रारंभिक राष्ट्रवादियों के मूल राजनीतिक उद्देश्य ये थे: भारतवासियों को एक राष्ट्र के रूप में एकताबद्ध करने की प्रक्रिया में सहायता देना, जनता की प्रभुसत्ता के सिद्धांत पर आधारित आधुनिक राजनीति की शुरूआत करना और उसके मन में यह विचार उत्पन्न करना कि राजनीति केवल शासक वर्गों का ही अधिकार नहीं है, भारतवासियों में आत्मविश्वास पैदा करना, भारत के राष्ट्रीय राजनीतिक नेतृत्व अथवा मुख्यालय की स्थापना करना, एक साम्राज्यवाद-विरोधी विचारधारा निर्मित करना और उसे एक ठोस रूप प्रदान करना, आधुनिक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के विकास को बढ़ावा देना, और अंत में एक व्यापक अखिल भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का निर्माण करना। कांग्रेस आन्दोलन के कई चरण थे, जिनमें भारत के हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, इसाई सबके हित की लड़ाई लड़ने के लिए स्वाधीनता आन्दोलन की क्रांति चलने वाली थी।'[13] जो इस प्रकार है -

क. उदार नरम पंथी राष्ट्रवादी युग (1885 ई. -1905 ई. तक)

ख. उग्र राष्ट्रवादी युग (1906 ई. -1919 ई. तक)

ग. राष्ट्रीयता का गांधीवादी युग (1920 ई.–1947 ई. तक)

इन अभियान की सबसे बड़ी उपलब्धि थी कि मजहब और सम्प्रदाय से ऊपर उठकर राष्ट्रीय भावना के विकास का वातावरण बनाना था तथा कांग्रेस में राष्ट्रीय शिक्षा का प्रभावी पाठ पढ़ाया जाना जिससे प्रजातंत्र एवं स्वाधीनता की अवधारणा में योगदान दे सकें। इन कांग्रेस आन्दोलनों के चरण में एक ऐसी पृष्ठभूमि तैयार की गई जिस पर आगे चलकर स्वतंत्रता पाने के लिए सारे आन्दोलन सफलतापूर्वक चलाये गये। राष्ट्रीय आन्दोलन में उग्रता की नींव लोकमान्य तिलक के 'केसरी समाचार पत्र' के राष्ट्रभाषा तथा राष्ट्रभाव के प्रचार से राखी गयी। उग्र राष्ट्रवादी युग के अंत के साथ ही गांधीवादी युग का प्रारंभ हो जाता है | भारत के राजनैतिक क्षेत्र में महात्मा गाँधी का प्रवेश एक नवीन युग का प्रारंभ माना जाता है। महात्मा गाँधी सत्य और अहिंसा के आधार पर भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के भीष्म पितामह माने जाते हैं। आधुनिक भारत के राजनैतिक, सामजिक और आर्थिक क्षेत्रों में घोर संघर्ष चल रहे थे और मानवीय आत्मा में अशांति और निराशा छाई हुई थी। महात्मा गाँधी द्वारा अपनी सम्यक दृष्टि से संसार को सत्य और अहिंसा का ऐसा व्यापक दृष्टिकोण रखा गया, जिससे भारत में विश्वबंधुत्व, सर्वोत्कृष्ट बल तथा सुदृढ़ साम्राज्य का स्वागत और सम्मान हो सके।

"इतिहासकारों के मुताबिक गाँधी जी का मन गाँवों में बसता था। 1919 ई. में गाँधी जी मुंबई एक संभावित बैरिस्टर के रूप में आये थे। मणि भवन से गाँधी जी ने कम से कम छह राष्ट्रीय आंदोलनों का नेतृत्व किया था। मुंबई में गाँधी जी ने मिल परिसर में सार्वजनिक भाषण दिए थे। यहाँ अक्सर भाषण के उपरान्त महिलायें अपने गहने दान कर देती थीं। मुम्बईवासियों ने असहयोग आन्दोलन के लिए 30 लाख रूपये दान दिए थे। 9 जनवरी, 1915 को गाँधी जी दोबारा मुंबई गए थे। 1919 में 'रोलेट एक्ट के विरोध में उन्होंने सत्याग्रह शुरू किया था। यह विरोध गाँधी जी ने मणि भवन से शुरू किया था। जुलाई 1921, एल्फिसटोन मिल में विदेशी कपड़ों की होलिका जली थी। इससे पूरे भारत में विदेशी सामानों के बहिष्कार

का दौर शुरू हुआ था। मणि भवन एक पुरानी शैली की दो मंजिला इमारत है। 4 जनवरी 1932 को गाँधी जी को मणि भवन से गिरफ्तार किया गया था। यहीं से स्वदेशी, कड़ी और हिन्दू-मुस्लिम एकता जैसे मुद्दे परवान चढ़े थे।'[14]

हिन्दू-मुस्लिम को एक करने के लिए गाँधी जी ने भारतीय भूमि पर कांग्रेस की अगुवाई करने हेतु दोनों को जोड़ दिया था, परन्तु जिन्ना ने हिन्दू-मुसलमानों के बीच के अंतर को समाप्त नहीं होने दिया, परिणामतः यह हिन्दू-मुस्लिम के बीच का तनाव देश विभाजन का कारण बना। 1906 ई. में मुस्लिम लीग ब्रिटिश भारत में एक राजनीतिक पार्टी थी और भारतीय उपमहाद्वीप में मुस्लिम राज्य की स्थापना में सबसे बड़ी वजह थी। इस बैठक में निर्णय लिया गया कि राजनीतिक मार्गदर्शन के लिए मुसलामानों को एक राजनीतिक मंच बनाने की जरूरत हैं।

कुछ इतिहासकार भारतीय और पाकिस्तानी भी यह मानते हैं कि मोहम्मद अली जिन्ना औपनिवेशिक भारत में हिंदू और मुसलमान दो पृथक राष्ट्र मानते थे। कुछ इतिहासकार इस बात पर भी बल देते हैं कि 1947 की घटनाएं और आधुनिक युग में हुए हिंदू मुस्लिम झगड़ों से जुड़े लंबा इतिहास है। देश का विभाजन एक ऐसे विवाद की सांप्रदायिक राजनीति का आखिरी बिंदु था जो बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में शुरू हुआ। "दिसंबर 1916 में लखनऊ समझौता हुआ। यह समझौता कांग्रेस और मुस्लिम लीग के आपसी ताल-मेल को दर्शाता है। इस समझौते के तहत कांग्रेस ने प्रथम चुनाव क्षेत्रों को स्वीकारा था। लखनऊ समझौते ने कांग्रेस के मध्यमवर्गीय, अतिवादियों और मुस्लिम लीग के लिए एक संयुक्त मंच प्रदान किया।"[15]

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों में साम्प्रदायिकता के कई कारण हुए। 1920-30 के दशकों में कई घटनाओं के कारण तनाव उभरे थे जैसे मस्जिद के सामने संगीत, गो-रक्षा आन्दोलन आदि घटनाएं साम्प्रदायिक हिंसा के रूप में तब्दील हुई। "19 वीं शताब्दी के आखिरी दशकों और प्रारंभिक 20 वीं

शताब्दी का यह उत्तर भारतीय हिन्दू सुधार आन्दोलन खासतौर पर पंजाब में सक्रिय था। आर्य समाज वैदिक ज्ञान का पुनरुत्थान कर विज्ञान की आधुनिक शिक्षा से जोड़ना चाहता था।"[16]

साम्प्रदायिक कार्यकर्त्ता के प्रचारक अपने-अपने समुदाय में दूसरे समुदाय के खिलाफ नकारात्मक प्रचार को बढ़ावा देते थे। जिसके कारण देश के विभिन्न भागों में दंगे फैलते गए। प्रत्येक सांप्रदायिक दंगों के कारण एक-दूसरे के बीच फर्क गहरे होते गए। सांप्रदायिक कलह 1947 के पहले भी थी लेकिन उसकी वजह से लाखों लोग अपने घरों से नहीं उजड़े थे।

"मुस्लिम लीग की शुरूआत 1906 ई. में ढाका में की गयी थी। शीघ्र ही लोग यू. पी. के विशेषकर अलीगढ़ के मुस्लिम संभ्रांत वर्ग के प्रभाव में आ गए। 1940 के दशक में पार्टी भारतीय उपमहाद्वीप के मुस्लिम बहुल क्षेत्रों की स्वायत्तता या फिर पाकिस्तान की मांग करने लगी।"[17] कुछ इतिहासकारों का मानना है कि लीग की यह मान्यता थी कि मुस्लिम हितों का प्रतिनिधित्व एक मुस्लिम पार्टी ही कर सकती है और कांग्रेस एक हिन्दू दल है। परन्तु जिन्ना की जिद थी कि लीग को मुसलामानों का 'एकमात्र प्रवक्ता' माना जाये जो उस दौरान बहुत कम लोगों को ही स्वीकार था। लीग संयुक्त प्रांत, बम्बई और मद्रास में ही लोकप्रिय था परन्तु उसका सामाजिक आधार बंगाल में काफी कमजोर था, जिसके आधार पर कांग्रेस द्वारा मुस्लिम लीग के प्रस्ताव को खारिज कर दिया गया था।

"हिन्दू महासभा की स्थापना 1915 ई. में हुई। यह एक हिन्दू पार्टी थी जो उत्तर भारत तक ही सीमित थी। यह पार्टी हिन्दुओं के बीच जाति एवं सम्प्रदाय के फर्क को खत्म करने का काम करती थी और हिन्दू समाज में एकता पैदा करने की कोशिश करती थी। हिन्दू महासभा, हिन्दू अस्मिता को मुस्लिम अस्मिता के विरोध में परिभाषित करने का प्रयास करती थी।"[18]

मौलाना आज़ाद ने 1937 ई. में यह सवाल उठाया कि कांग्रेस के सदस्यों को लीग में शामिल होने की छूट तो नहीं है परन्तु उन्हें हिन्दू महासभा में शामिल होने से नही रोका जाता। इस सवाल के कारण

कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने दिसम्बर 1938 ई. में यह ऐलान किया कि कांग्रेस के सदस्य हिन्दू महासभा के सदस्य नहीं हो सकते क्योंकि उनका विश्वास था कि भारत-केवल हिन्दुओं का देश है। जबकि भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। पाकिस्तान की स्थापना की मांग धीरे-धीरे ठोस रूप ले रही थी। 23 मार्च 1940 में मुस्लिम लीग ने भारतीय उपमहाद्वीप के मुस्लिम बहुल इलाकों के लिए स्वायत्तता की मांग का प्रस्ताव पेश किया। कुछ लोगों का मानना है - "पाकिस्तान के गठन की माँग उर्दू कवि मोहम्मद इकबाल से शुरू होती है जिन्होंने 'सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्तान हमारा' लिखा था। 1930 ई. में मुस्लिम लीग के अधिवेशन में अध्यक्षीय भाषण देते हुए उन्होंने 'उत्तर पश्चिमी भारतीय मुस्लिम राज्य' की जरूरत पर मुख्य रूप से जोर दिया था।"[19]

"पाकिस्तान (पंजाब, अफगान, कश्मीर, सिंध और बलूचिस्तान) नाम केम्ब्रिज के एक पंजाबी मुसलमान छात्र चौधरी रहमत अली ने 1933 और 1935 में लिखित दो पर्चों में गढ़ा। रहमत अली इस नई इकाई के लिए अलग राष्ट्रीय हैसियत चाहता था। 1931 के दशक में किसी ने रहमत अली की बात को गंभीरता से नहीं लिया। यहाँ तक कि मुस्लिम लीग और अन्य मुस्लिम नेताओं ने भी उसके इस विचार को केवल एक छात्र का स्वप्न समझकर खारिज कर दिया।"[20] प्रारम्भ में मुस्लिम नेताओं द्वारा एक संप्रभु राज्य पाकिस्तान की मांग विशेष संजीदगी से नहीं उठाई थी। स्वयं जिन्ना भी पाकिस्तान की सोच को सौदेबाजी में एक पैंतरे के तौर पर प्रयोग कर रहे थे, जिससे वे सरकार द्वारा कांग्रेस को मिलाने वाली रियासतों पर रोक लगाने और मुसलमान के लिए और रियासतें हासिल करने के लिए प्रयोग कर सकते, परन्तु कुछ समय के पश्चात मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान की अपनी माँग को गति में लाने का फैसला किया। मुस्लिम लीग के 1940 ई. में रखे गए प्रस्ताव की मांग थी कि- "भौगोलिक दृष्टि से सटी हुई इकाइयों को क्षेत्रों के रूप में चिह्नित किया जाए, जिन्हें बनाने में जरूरत के हिसाब से इलाकों का फिर से ऐसा समायोजन किया जाये

कि हिन्दुस्तान के उत्तर पश्चिम और पूर्वी क्षेत्रों जैसे जिन हिस्सों में मुसलामानों की संख्या ज्यादा है, उन्हें इकठ्ठा करके 'स्वतंत्र राज्य' नाम दिया जाये जिसमें शामिल इकाइयाँ स्वाधीन और स्वायत्त होंगी।"[21]

16 अगस्त 1946 ई. को पाकिस्तान की मांग को मुस्लिम लीग ने प्रत्यक्ष कार्यवाही करने का फैसला लिया। 16 अगस्त 1946 ई. को 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस मानाने की घोषणा की गयी। उसी दिन कलकत्ता में दंगा भड़क उठा। यह दंगा कई दिनों तक चला और उसमें कई हजार लोग मारे भी गए थे। मार्च 1947 तक यह दंगा उत्तर भारत तक पहुँच गया और उत्तर भारत के बहुत सारे भागों में हिंसा फैला रही थी। कलकत्ता और नोआखली में जनसंहार हो रहे थे। विभाजन का सबसे खूनी और विनाशकारी रूप पंजाब में देखने को मिला। पश्चिमी पंजाब से सभी हिन्दुओं और सिक्खों को भारत की तरफ हांक दिया गया और पंजाबी भाषी मुसलामानों को पाकिस्तान की ओर उखाड़ फेंका गया। बंगाल में यह पलायन अधिक लम्बे समय तक चलता रहा। लोग अन्तराष्ट्रीय सीमा के पास लगातार जाते रहे। बंगाल विभाजन का आधार धर्म को बनाया गया। बहुत सारे बंगाली हिन्दू पूर्वी पाकिस्तान में जबकि बहुत सारे बंगाली मुसलमान पश्चिम बंगाल में ही रहे। आख़िरकार, बंगाली मुसलामानों ने अपनी राजनीतिक नींव के जरिये जिन्ना के द्वि-राष्ट्र सिद्धांत को नकार दिया और पाकिस्तान से अलग होने का फैसला लिया। परिणामतः 1971-72 ई. में बांग्ला देश की स्थापना हुई।

"9 अगस्त 1942 में महात्मा गाँधी द्वारा 'भारत छोड़ो आन्दोलन' की शुरूआत की गयी। यह स्वतंत्रता संग्राम की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। 14 जुलाई 1942 को वर्धा में कांग्रेस कार्य समिति की बैठक हुई थी जिसमें 'अग्रेजों भारत छोड़ो' प्रस्ताव पारित हुआ। 8 अगस्त 1942 को कांग्रेस की बम्बई के ग्वालियाँ टैंक मैदान में बैठक हुई जिसमें 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव को मंजूरी मिली थी। महात्मा गाँधी ने 'करो या मरो' का नारा दिया और आन्दोलन की घोषणा के 24 घंटे के भीतर सभी बड़े नेता गिरफ्तार कर लिए गए। महात्मा गाँधी जी को पुणे के 'आगाखान पैलेस' में रखा गया। अरुणा आसफ अली ने 9 अगस्त को

मुंबई में तिरंगा फहराया। अंग्रेजों की तमाम कोशिशों के बावजूद भी कई राष्ट्रीय नेता गिरफ्तार नहीं हो पाए, इनमें क्रांतिकारी अरुणा आसिफ अली भी शामिल थी। इस आन्दोलन का नेतृत्व करने हेतु जनता के बीच से नेता उभरकर सामने आये। जयप्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया, सुचिता कृपलानी जैसे नेताओं ने भूमिगत रहकर आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया। उषा मेहता तथा उनके अन्य साथियों ने कई महीनों तक कांग्रेस रेडियो का प्रसारण किया। लोग ब्रिटिश शासन के प्रतीकों के खिलाफ प्रदर्शन करने सड़कों पर निकल पड़े और सरकारी इमारतों पर तिरंगा फहराना शुरू कर दिया। 1942 से पहले ही भारत छोड़ो आन्दोलन की नींव पड़ी थी।'[22]

द्वितीय विश्वयुद्ध (1943) से बने माहौल के कारण आन्दोलन ने जोर पकड़ा था इसके बाद विश्व दो ध्रुवुओं (मित्र राष्ट्र और धुरी राष्ट्र) में बंट गया था। 1939 में अमेरिका, सोवियत संघ और ब्रिटेन मित्र राष्ट्र में शामिल हुए थे और धुरी राष्ट्र में जर्मनी, इटली और जापान प्रमुख शक्तियां शामिल थी। आधुनिक भारत के निर्माण में दुनिया भर में नागरिक अधिकारों, आंदोलनों को प्रेरित किया। अन्तराष्ट्रीय मंच पर गाँधी जी के द्वारा भारत एक परिपक्व राष्ट्र के रूप में उभरा। दक्षिण अफ्रीका में नस्लवाद के खिलाफ उन्होंने नेतृत्व किया। भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में विदेशी बहिष्कार का एक लम्बा और महत्वपूर्ण इतिहास रहा है। इस प्रकार यह ब्रिटिश शासन को समाप्त करने का प्रमुख कारक बन गया। 1947 ई. में ब्रिटिश भारतीय साम्राज्य को दो स्वतंत्र प्रभुत्वों में विभाजित किया गया, जिसकी आधारशिला धर्म को बनाया गया। परिणामतः भारतीय अधिराज्य और पाकिस्तान अधिराज्य अस्तित्व में आया। 15 अगस्त 1947 ई. में भारत ने अंग्रेजी शासन से पूर्णतः स्वतंत्रता प्राप्त की। इस विशाल देश को दो भागों में विभाजित करके दोनों को सर्वप्रभु सत्ता संपन्न स्वतंत्र राष्ट्र बने थे इसलिए यह घोषणा की गयी थी कि जून 1948 से पहले-पहले सत्ता के सूत्र को भारतीय नेताओं को सौंप दिया जायेगा और इस घोषणा के साथ ही दो स्वतंत्र देशों की स्थापना का सिलसिला शुरू हो गया। "स्वतंत्र पाकिस्तान 14 अगस्त को अपने अस्तित्व में आ गया

था। दोनों देशों के बीच सीमा रेखा 17 अगस्त को खींची गयी थी, परन्तु 15 अगस्त, 1947 के दिन ही लाल किले पर तिरंगा फहरा दिया गया। इन सीमा रेखाओं की निशानदेही सीमा आयोग के अध्यक्ष सर सिरिल रैड्क्लिफ द्वारा खींची गयी। रेडक्लिफ एक ऐसा शख्स था जिन्हें भारत की संस्कृति, भूगोल, धर्म, जातियों के विषय में कुछ भी जानकारी नहीं थी। इस निशानदेही का परिणाम यह हुआ कि एक 'यूनियन ऑफ़ इण्डिया' और 'डोमिनियन ऑफ़ पाकिस्तान' नाम से विश्व के सामने अस्तित्व में आया। उसके उपरान्त 26 जनवरी 1950 ई. में भारत एक गणराज्य बना।"[23]

भारत एक बहुजातीय और बहुधार्मिक राष्ट्र है। भारत को समय-समय पर साम्प्रदायिक तथा जातीय विद्वेष का शिकार होना पड़ा है। देश के अलग-अलग हिस्सों में क्षेत्रीय असंतोष तथा विद्रोह होते रहे हैं। भारत के पड़ोसी देशों के साथ प्रायः सीमा विवाद होते रहते हैं।

बंगाल विभाजन : देश-विभाजन का बीजारोपण

बंगाल विभाजन देश विभाजन का बीजारोपण है। दूरदर्शी अंग्रेजों द्वारा बंगाल विभाजित करके भारत विभाजन का बीज बोया गया था। ब्रिटिश सरकार की नीति 'विभाजन' की थी। विभाजन बंगाल के विभिन्न भागों में रहने वाले हिन्दू-मुस्लिम की अधिकतम संख्या पर आधारित थी। अंग्रेजों के द्वारा यह झूठा प्रचार होता रहा कि बंगाल विभाजन मुस्लिमों की मांग थी जबकि 'नेशनल मोहम्दन मूवमेंट' की कलकत्ता में बंगाल विभाजन के प्रति पूर्ण असहमति थी। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में अंग्रेजों द्वारा कुछ फैसले लिए गए थे, जिसका भारत की स्वतंत्रता में अभूतपूर्व योगदान रहा। अंग्रेजों द्वारा बंगाल तोड़ने का निर्णय 'बंग-भंग' के नाम से जाना जाता है। यह देश में एक नई क्रांति की लहर लेकर आई। 'बंगाल विभाजन का निर्णय ब्रिटिश वायसराय लार्ड कर्जन के द्वारा लिया गया था, जिसका भरी विरोध तत्कालीन राष्ट्रवादी नेताओं ने किया। '16 अक्टूबर 1905 ई. को बंगाल का विभाजन हुआ। परिणामतः देश को बहुत बड़े परिवर्तन का सामना करना पड़ा था। इस विभाजन से राष्ट्रीय स्तर पर ब्रिटिश सरकार के खिलाफ

असंतोष फ़ैल गया। हिन्दुओं ने इस विभाजन का विरोध करते हुए हिंसक और अहिंसक आन्दोलन भी किये। बंगाल विभाजन का मुद्दा पहली बार 1903 ई. में उठा था।'[24]

ब्रिटिश वायसराय ने बंगाल के पूर्वी जिलों का दौरा किया और आम जनमत के विचारों से अवगत हुआ। ब्रिटिश वायसराय लार्ड कर्जन ने बंगाल के कुछ महत्वपूर्ण व्यक्तियों से बंगाल विभाजन के मुद्दों पर बात की। उन्होंने बंगाल विभाजन पर सरकार का पक्ष समझाते हुए एक भाषण में कहा कि ब्रिटिश राज के अंतर्गत बंगाल, फ्रांस जितना बड़ा है, इसकी जनसँख्या ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस को मिलाकर जितनी है, इस कारण इसे तोड़ने से प्रशासनिक प्रगति होगी। ब्रिटिश सरकार द्वारा बंगाल में शामिल पांच हिंदी भाषी राज्यों को मिलाकर एक केंद्र में सेंट्रल प्रोविंस बनाने की योजना थी। इसके बदले पश्चिम क्षेत्र में 5 उड़िया भाषी राज्य सेंट्रल प्रोविंस से मिलने वाले थे। इससे बंगाल का क्षेत्र विस्तार हो जाता तथा बंगाल की जनसंख्या में भी वृद्धि हो जाति। हालांकि पश्चिम में बंगाली बोलने वालों की संख्या अधिक थी और बिहार और उड़िया बोलने वालों की संख्या काफी कम थी। इस नए प्रान्त के प्रशासन में एक विधान परिषद्, दो सदस्यों के राजस्व बोर्ड और कलकत्ता उच्च न्यायालय के अधिकार क्षेत्र को निर्विवाद छोड़ देने की योजना थी। ब्रिटिश सरकार ने पूर्वी बंगाल और असम को अस्पष्ट रूप से पश्चिमी सीमा में शामिल करने का निर्णय लिया। इसकी भौगोलिक जातीय, भाषायी और सामाजिक विशेषताओं की सीमा तय की। 19 जुलाई 1905 में बंगाल और विस्थापन के प्रस्ताव पर निर्णय जारी रहा और इस प्रकार 1905 ई. को भारत के महत्वपूर्ण हिस्से का विभाजन हुआ।

लार्ड कर्जन ने कहा- "बंगाल एक शक्तिशाली राज्य है। बंगाल विभाजन से बंगालियों में भी कई प्रकार का विभाजन हो जायेगा। वास्तव में बंगाली समुदाय ही पहला वर्ग है, जिसने अंग्रेजी शिक्षा का लाभ उठाया था। समस्त बुद्धिजीवी और सिविल सर्विसेज में जाने वाले लोगों में भी बंगाली समुदाय की प्रधानता थी। इसी तरह सरकारी महकमों में भी बंगालियों की प्रधानता थी। इस तरह बंगाल के विभाजन से उनका

प्रभाव कम होना स्वाभाविक था। इससे राष्ट्रीय स्तर पर चल रहे संघर्ष में भी विभाजन हो गया था। बंगाली जो खुद को एक राष्ट्र मानते थे, वो अपने ही प्रोविंस में भाषा संबंधी अल्प समुदाय में शामिल नहीं होना चाहते थे। हिन्दू जो अल्पसंख्यक में होकर भी प्रभावशाली थे और मुस्लिम बहुल होने पर भी उनकी प्रभाविता नहीं थी। इसलिए हमने हिन्दू-मुस्लिम को एक दुसरे के सामने लाने की सोची। यूनाइटेड प्रोविंस की राजधानी कलकत्ता अब भी ब्रिटिश इण्डिया की राजधानी थी, जिसका मतलब था बंगाली ही ब्रिटिश शक्ति का केंद्र थे। इसके अलावा बंगाली मुसलामानों को हमारा वफादार माना जाता है, क्योंकि उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ 1857 की क्रांति में भाग नही लिया।"[25]

'बंग-भंग' घोषणा से बंगाली समुदाय ने अंग्रेजों के खिलाफ अपना रोष व्यक्त करना शुरू कर दिया। बंगाल के पूर्व लेफ्टिनेंट गवर्नर सर अन्द्र्यु फेंसर ने बंगाल विभाजन का विरोध करने वाले क्रांतिकारियों पर हमला किया। देखते ही देखते यह बंग-भंग विरोध के आन्दोलन का स्वर पूरे देश में गूँज उठा।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अमार सोनार बांग्ला लिखा। यह बंग-भंग के विरोध में लिया गया था। यह कालांतर में 1972 ई. से बांग्लादेश का राष्ट्रीय गान बना। बंकिम चन्द्र चटर्जी ने 1905 ई. में 'वन्दे मातरम' लिखा। यह गीत क्रांतिकारियों के लिए राष्ट्रगीत बन गया था। बंगाल के क्रांतिकारियों के लिए बंगाल पवित्र भूमि थी क्योंकि वहां माता काली की पूजा होती थी। माता काली को विनाश की देवी माना जाता है, इसलिए क्रांतिकारियों द्वारा अपने हथियार उन्हें सपर्पित कर दिए थे। बंगाल विभाजन देश में कई क्रांतिकारियों को उभारता है। इन क्रन्तिक्ररियों में तीन नाम मुख्य हैं, जिनमें लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चन्द्र पाल शामिल हैं। इन्हें 'लाल-बाल-पाल' के नाम से भी जाना जाता है। बाल गंगाधर तिलक ने नारा भी दिया था –"स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, इसे हम लेकर रहेंगे।' बंगाल विभाजन के दौरान ही देश में दो दलों 'गरम दल' और 'नरम दल' का भी गठन हुआ, जिनमें से गरम दल का प्रतिनिधित्व ये तीनों नेता ही कर रहे थे। 17 फरवरी 1904 ई. को रिसले महोदय ने अपने पत्र में कहा

था- "सभ्यता, आदत, परंपरा, भाषा को देखते हुए विभाजन पर बंगाल के पूर्वी जिलों में विभाजन पर जनता की राय का आकलन करने के लिए अधिकाधिक दौरे करने हैं। परन्तु मुसलमानों ने इसका विरोध किया तो 'लार्ड कर्जन' ने मुसलमानों की असहमति पर उन्हें समझाते हुए यह बताया था कि हमारा उद्देश्य प्रशासकीय सुविधा देने के साथ ही, एक अलग मुस्लिम प्रान्त जहाँ इस्लाम के अनुयायियों का बोल-बाला हो, जहाँ मुसलमानों की एकता को बढ़ावा देना है।"[26]

ब्रिटिश सरकार का एकमात्र उद्देश्य प्रभाव की दृष्टि से एकमात्र बंगाल विभाजन का कार्य नितांत धूर्ततापूर्ण व षड्यंत्र था। परिणामतः 16 अक्टूबर 1905 ई. को भारतवासियों ने बंगाल विभाजन के कारण 'शोक दिवस और संकल्प दिवस' के रूप में मनाया था। इस प्रकार सर्वप्रथम 1903 में बंगाल विभाजन के बारे में सोचते हुए, चटगाँव, ढाका और नीमन सिंह के जिलों को अलग कर असम प्रान्त में मिलाने का प्रस्ताव रखा गया। सन 1903 में कांग्रेस का उन्नीसवें अधिवेशन के सभापति श्री 'लाल मोहन घोष' ने मद्रास में इस सरकार की प्रतिक्रियावाद नीति की खुलकर आलोचना की। बंग भंग के विरुद्ध बहुत भारी आन्दोलन हुआ, जिसमें देश के प्रसिद्ध कवियों और साहित्यकारों द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गयी। "सन 1911 के 12 दिसम्बर को दिल्ली में एक दरबार के दौरान सम्राट पंचम जॉर्ज, साम्राज्ञी मैरी तथा भारत सचिव लार्ड क्रू आये थे और राजकीय घोषणा के माध्यम से पश्चिमी और पूर्वी बंगाल के बंगला भाषी इलाकों को एक प्रान्त में लाने का आदेश जारी किया जिससे राजधानी कलकत्ता को हटाकर नई राजधानी दिल्ली को बनाया गया।"[27] भारत का स्वंतंत्रता आन्दोलन राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर उत्तेजनाओं, आह्वानों तथा प्रयत्नों से प्रेरित भारतीय राजनैतिक संगठनों द्वारा संचालित अहिंसावादी आन्दोलन था, जिसका एकमात्र उद्देश्य अंग्रेजी शासन से भारतीय उपमहाद्वीप को स्वतंत्र करना था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा 1929 लाहौर के अधिवेशन में अंग्रेजों से पूर्ण स्वराज्य की मांग की।

बांग्ला देश : जन्म और जंग

1947 तक भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश भौगोलिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक तौर पर एक राष्ट्र थे। धर्म और भाषायी आधार पर विभाजन की शुरूआत हुई। किसी भी देश की जमीन के विभाजन के साथ ही लोगों की भावनाओं का भी विभाजन होता है। काल प्रवाह के कुछ ऐसे एतिहासिक क्षण जो अपनी छाप परवर्ती युगों तक छोड़ जाते हैं। विभाजन का क्षण मानवीय संबंधों को लगभग नष्ट कर देने वाला था। भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ सदैव से सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध की कामना रखता है। अपनी अखंडता और संप्रभुता को बनाये रखने हेतु, भारत कभी भी किसी पड़ोसी मुल्कों को दबाने या क्षेत्र विस्तार की महत्वाकांक्षा नहीं रखता। जब भी पड़ोसी मुल्क को आवश्यकता पड़ी, भारत ने बड़ी ही उदारता के साथ एक कदम बढ़कर मदद की, चाहे वह आर्थिक संकट, मानवाधिकार के मामले या फिर गृह युद्ध हों। भारत सदैव ही एक सक्षम पड़ोसी की भूमिका में खड़ा रहा है।

1947 के भारत पाकिस्तान विभाजन के फलस्वरूप बंगाल भी दो हिस्सों में बंट गया। इसके हिन्दू बहुल इलाकों को भारत के हिस्से में जोड़ा गया, जिसे पश्चिम बंगाल के नाम से जानते हैं तथा मुस्लिम बहुल इलाकों (पूर्वी बंगाल) को पाकिस्तान के हिस्से में शामिल किया गया, जो पूर्वी पाकिस्तान के नाम से जाना गया। विभाजन के आधार पर विस्थापन का दंश किसी भी राष्ट्र की राजनीतिक सच्चाई को दर्शाता है। धार्मिक बहुसंख्यक के आधार पर विभाजन का फैसला हुआ। इसके मायने यह थे कि जिस क्षेत्र में एक धर्म की बहुसंख्या थी उस भू-भाग पर उस धर्म का आधिपत्य होगा। ब्रिटिश भारत में कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं था, जहाँ मुसलमान बहुसंख्यक न हों। मुसलमान बहुसंख्यकों का एक क्षेत्र पश्चिम में था तो दूसरा क्षेत्र पूर्व में था। दोनों क्षेत्रों को एक करने का कोई उपाय नहीं था, जिसके कारण एक पश्चिमी पाकिस्तान तथा दूसरा पूर्वी पाकिस्तान (वर्तमान बांग्लादेश) के नाम से जाना जाता है।

'पश्चिमी पाकिस्तान द्वारा पूर्वी पाकिस्तान के लोगों की उपेक्षा की जाती थी। पूर्वी पाकिस्तान के लोगों को अपने अधिकारों के लिए तरसना पड़ रहा था। जमींदारी प्रथा ने पूर्वी पाकिस्तान के क्षेत्र को बुरी तरह झकझोर रखा था जिसके खिलाफ 1950 ई. में एक बड़े आन्दोलन की शुरूआत हुई और 1952 के 'बांग्ला भाषा आन्दोलन' के साथ जुड़कर यह बांग्लादेशी गणतंत्र की दिशा में एक आंदोलन बन गया। 1948 ई. में 'उर्दू' को पाकिस्तान की राष्ट्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त हुआ। बांग्ला भाषी लोगों में इसे लेकर गुस्सा भड़क उठा तथा 1955 ई. में पाकिस्तान सरकार ने पूर्वी बंगाल का नाम बदलकर पूर्वी पाकिस्तान कर दिया था। ढाका में छात्रों के एक बड़े समूह ने बांग्ला को बराबरी का दर्जा देने हेतु बड़े स्तर पर विरोध प्रदर्शन किया। जिससे कई निर्दोष लोगों की मौत हुई थी, जिसके कारण बांग्ला आंदोलन हिंसक हो गया था। इस आंदोलन ने भाषायी पहचान को लेकर अलग देश की मांग के बीज बो दिए। इस आंदोलन ने बंगाल की राष्ट्रीय अस्मिता को जन्म दिया और फिर शुरू हुआ अलग राष्ट्र बनाने की मांग। 1970 में हुए पाकिस्तान के आम चुनाव ने बांग्लादेश के आम लोगों को अलग राष्ट्र बनाने को मजबूर कर दिया। इस चुनाव के नतीजों ने विघटन तय कर दिया। पश्चिम पाकिस्तान ने आवामी लीग को मिली सबसे ज्यादा सीट के चुनाव नतीजों को मानने से इनकार कर दिया। इसके खिलाफ 7 मार्च 1971 को ढाका में विशाल रैली का आयोजन किया गया।'[28]

विशाल रैली आयोजन का परिणाम यह हुआ कि बांग्ला 'मुक्ति संग्राम' की शुरूआत हुई, तत्पश्चात 'बांग्लामुक्तिवाहिनी' का गठन हुआ। बांग्लादेश का स्वाधीनता आंदोलन शुरू हुआ। पाकिस्तानी फौज की दमनात्मक कार्रवाई की शुरूआत हुई, जिसके कारण लाखो की संख्या में लोग भारत की सीमा में घुसने लगे, इस दौरान पाकिस्तान ने भारत के कई हिस्सों पर हमला किया। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने बांग्लादेश की लड़ाई को भारत की लड़ाई के रूप में लिया और बांग्लादेशी शरणार्थियों को भारत में शरण दी। 1970-71 ई. में शेख मुजीबुर खान के नेतृत्व में बांग्लादेश की स्वायत्तता का आन्दोलन प्रारम्भ हो

गया। पूर्वी-पाकिस्तान अर्थात बांग्लादेश की जनता पूर्णतः मुजीबुर खान के साथ हो गयी। पाकिस्तानी राष्ट्रपति अय्यूब खान ने बंगालियों पर अत्याचार करना प्रारम्भ कर दिया जिससे घबराकर बहुत से बांग्लादेशी अपना घर बार और सामान छोड़ कर भारत की सीमा में प्रवेश करने लगे। भारत में धीरे-धीरे इनकी संख्या एक करोड़ तक पहुँच गयी जिसके कारण भारत में शरणार्थी संकट बढ़ गया। ऐसे में भारत सरकार ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को मानवाधिकार का हवाला दिया कि बांग्लादेश के नागरिकों को पाकिस्तान के जुर्म से बचाया जाये।

'मार्च 1971 ई. में इंदिरा गाँधी द्वारा पूर्वी पाकिस्तान की मदद देने का ऐलान किया गया। जुलाई 1971 में संसद में सार्वजानिक रूप से मदद की घोषणा की गयी थी। भारतीय सेनाओं द्वारा पूर्वी पाकिस्तान के मुक्तिवाहिनी सैनिकों को सहायता और प्रशिक्षण दिया गया। भारत देश ने 'सयुक्त राष्ट्र संघ' से पूर्वी पाकिस्तान में चल रहे नरसंहार व दमन के शोषण पर हस्तक्षेप करने की मांग की। कई देशों ने इसका विरोध भी किया, फिर भी पूर्वी पाकिस्तान की सहायता भारत ने की। 2 दिसम्बर 1971 को पाकिस्तानी वायुसेना ने भारत के हवाई अड्डों पर भीषण बमबारी की शुरूआत कर दी। फलतः 4 दिसम्बर 1971 ई. को भारतीय सेना ने जबाबी कार्यवाही प्रारम्भ कर दी। शांति स्थापित करने के भारत के लगातार प्रयास के बावजूद भी पाकिस्तान अपनी दमनकारी नीतियों का अंत नहीं कर रहा था, जिसके कारण भारत को इस लड़ाई में सीधे तौर पर शामिल होना पड़ा। इसके साथ ही 1971 ई. में भारत-पाकिस्तान युद्ध की शुरूआत हो गयी। परिणामतः पाकिस्तान के अधिकतर वर्गमील भूमि पर भारत ने अधिकार कर लिया। अंततः 16 दिसम्बर 1971 ई. में ढाका में एक सैनिक सामारोह में पाकिस्तान के जनरल नियाज ने लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा के सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया। उसके साथ ही तिरानवे हजार सैनिकों ने भी हथियार डाल दिए।'[29]

पाकिस्तान, चीन, अमेरिका और इस्लामिक देश बांग्लादेश गठन के खिलाफ थे, परन्तु भारत ने पूर्वी पाकिस्तान को पूरा सहयोग दिया। बांग्लादेश के बनने में भारत ने अपना महत्वपूर्ण योगदान देकर मानवता का धर्म निभाया। इस प्रकार 16 दिसम्बर 1971 ई. को स्वतंत्र बांग्लादेश का उदय हुआ।

किसी देश की जमीन के विभाजन के साथ ही लोगों की भावनाओं का भी विभाजन होता है जिसके कारण बहुत कुछ टूट जाता है। ब्रिटिश सरकार भारत को धर्म के आधार पर दो हिस्सों में बांटने के प्रयास में सफल रही जिसके कारण भारत को विभाजन का विष पीना पड़ा और दुनिया के नक्शे पर पकिस्तान की दस्तक हुई। 15 अगस्त को दंगों का दूसरा दौर आरम्भ हुआ और यह दुनिया के सबसे बड़े विस्थापन का सच बन कर सामने आया, जो नरसंहार की गाथा को दर्शाती है। भारत के स्वतंत्र होने के बाद भी अनेक लोगों को यह भी नहीं पता था कि वह भारत में हैं या पाकिस्तान में हैं। पंजाब और बंगाल का बंटवारा विभाजन की सबसे बड़ी त्रासदी साबित हुआ। विभाजन की सबसे बड़ी कठिनाई अल्पसंख्यकों की थी। सीमा के दोनों तरफ अल्पसंख्यक ही थे। भारत-पाकिस्तान विभाजन के पश्चात जो क्षेत्र पाकिस्तान के हिस्से में गया वहाँ लाखों की संख्या में हिन्दू और सिक्ख समुदाय की आबादी थी, ठीक इसी प्रकार पंजाब और बंगाल के भारतीय भू-भाग पर लाखों की संख्या में मुसलमान थे। इन सभी लोगों को अपने ही घर में विदेशियों जैसा अनुभव होने लगा। जैसे ही यह बात साफ़ हुई कि देश का बंटवारा होगा, दोनों ही जगह पर अल्पसंख्यकों पर हमला होने लगा। किसी को भी अनुमान नहीं था कि यह हिंसा का रूप धारण कर लेगा। यह हिंसा राजनेताओं के हाथ से बेकाबू हो रही थी। उनके पास हिंसा को काबू करने की कोई योजना नहीं थी। अधिकतर अल्पसंख्यकों को अपना घर चंद घंटों की मोहलत के भीतर खाली करना पड़ा। इस प्रकार 1947 ई. में बड़े पैमाने पर एक जगह की आबादी दूसरे जगह जाने को मजबूर हुई थी। धर्म के नाम पर एक समुदाय के लोगों ने दूसरे समुदाय के लोगों को बेरहमी से मारा था। लाहौर, अमृतसर और कलकत्ता जैसे शहर साम्प्रदायिक अखाड़े में तब्दील हो गए थे। जिन इलाकों में हिन्दू अथवा सिक्ख आबादी थी वहाँ

मुसलामानों ने जाना छोड़ दिया और जहाँ मुस्लिम आबादी थी, वहाँ हिन्दू और सिक्ख नहीं गुजरते थे। लोग अपना घर बार छोड़ने के लिए विवश हो गए। वे सीमा के एक तरफ से दूसरी तरफ गए और इस क्रम में लोगों को बड़ी से बड़ी विपत्ति का सामना करना पड़ा। भारत व पाकिस्तान के हिस्से से अल्पसंख्यक अपने घरों से भाग खड़े हुए और अस्थाई तौर पर उन्हें शरणार्थी शिविरों में पनाह लेनी पड़ी। कल तक जो लोगों का अपना वतन हुआ करता था, वहीं की पुलिस अथवा स्थानीय प्रशासन अब इन लोगों के साथ रुखाई का बर्ताव कर रहे थे। लोगों को सीमा से दूसरी ओर जाना पड़ा, उन्हें हर हाल में जाने के लिए दबाव डाला जाता था। लोगों ने पूरी दूरी पैदल चलकर तय की। सीमा के दोनों ओर हजारों की तादाद में औरतों को अगवा कर लिया गया। औरतों से जबरन धर्म परिवर्तन कराया गया और उन्हें शादी करने को मजबूर किया गया।

कई मामलों में यह देखा गया कि खुद परिवार के लोगों ने अपने घर कुल की इज्जत बचाने के नाम पर घर की बहू-बेटियों को मार डाला। बहुत से बच्चे अपने माँ-बाप से बिछुड़ गए। जो लोग सीमा पार करने में किसी तरह सफल रहे उन्होंने पाया कि अब वे बे-ठिकाना हो गए हैं। ऐसे में उन्हें महीनों और कभी-कभी सालों तक किसी शरणार्थी शिविर में जिंदगी काटनी पड़ी थी। यह बंटवारा वित्तीय संपदा के साथ-साथ टेबल, कुर्सी, टाइपरायटर और पुलिस के वाद्ययंत्रों तक का हुआ था। सरकारी और रेलवे कर्मचारियों का भी बंटवारा था। 1947 का वर्ष हिंसा व त्रासदी का वर्ष माना जाता है। यह एक ऐतिहासिक वर्ष था जो लोगों के विस्थापन से होने वाली अनेक समस्याएँ लेकर आया था।

विस्थापन की अवधारणा

विस्थापन से अभिप्राय एक स्थान परिवेश से दूसरे में बलपूर्वक स्थानान्तरण किया जाना है। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि विस्थापन जबरदस्ती स्थानांतरण है। यह एक भौतिक परिवेश से नए भौतिक परिवेश में बलपूर्वक स्थानांतरण है जिसमें नया परिवेश, आर्थिक, सामाजिक, या सांस्कृतिक

कारणों से हो सकता है, जो किसी भी व्यक्ति या समुदाय के लिए प्रासंगिक जानकारी हो सकता है। सामाजिक विज्ञान के संदर्भ में विस्थापन के दो तरह के पहलुओं को देखते हैं। पहले अर्थ में प्रवास के तौर पर समझा जाता है, जबकि दूसरे अर्थ में इसका अभिप्राय विस्थापन है। दोनों शब्द एक दूसरे के पूरक माने जाते हैं परंतु दोनों के भावार्थ एक दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं। प्रवास से अभिप्राय स्वैच्छिक स्थानांतरण है, एक स्थान को छोड़कर किसी दूसरे स्थान पर बसने से है। मानव अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्थानांतरण करता है। भारत में बड़ी संख्या में मानव बेहतर अवसर की तलाश में भिन्न-भिन्न स्थानों में प्रवास करते हैं जन्म दर और मृत्यु दर के अतिरिक्त एक और घटक है जो जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करता है जिसे प्रवास कहा जाता है। "विस्थापन शब्द अंग्रेजी भाषा के 'डिस्प्लेसमेंट' शब्द से बना है जिसका अर्थ है अपना स्थान परिवर्तित करना तथा बलपूर्वक स्थान परिवर्तन की ओर इंगित करना। जब कोई व्यक्ति अथवा समूह किसी भी कारण से अपने स्थायी स्थान से हटा दिया जाता है तो इस प्रक्रिया को विस्थापन कहते हैं, जबकि हटाये गए व्यक्ति को विस्थापित कहते हैं।"[30]

विस्थापन मूल रूप से एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति परिवार या समूह का अपने जीवन को प्रभावित करने वाले घटकों या फिर प्राकृतिक एवं मानव जनित परिस्थितियों के सामने विवश होकर अपने मूल स्थान से नए स्थान की ओर किया गया स्थानांतरण है। विस्थापन शब्द का अर्थ है अपने मूल रूप से कटना और मौलिक जगह से हटना। कभी-कभी यह परिस्थितिवश होता है तो कभी इसकी आवश्यकता होती है। कभी बिना वजह यह समस्या उत्पन्न की जाती है तो कभी हम इसे श्वेच्छा से अपना लेते हैं। कभी यह हमारी विवशता की परिचायक होती है तो कभी अच्छा जीवन जीने के लिए नए अभियान के रूप में। मनुष्य का पूरा इतिहास इस तथ्य का दस्तावेज है कि वह अपने जीवन-यापन हेतु एक जगह से विस्थापित होकर दूसरी जगह पर चला जाता है। इस प्रकार का विस्थापन मानवीय सभ्यता की प्रगति का आधार स्तंभ माना जाता है। विस्थापन की प्रक्रिया में स्वयं में कुछ ऐसा नहीं है जिससे कोई समस्या उत्पन्न होती है।

यह हमारे दिन प्रतिदिन का अनुभव है कि जब भी व्यक्ति समूह या किसी समुदाय को रोजगार के नए अवसर दिखाई पड़ते हैं तो वह अत्यंत आसानी से अपने पुराने स्थान से इसलिए भी विस्थापित होता है जिससे कि नई जगह स्थापित होकर प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ सकें। मानव का इतिहास इस बात को हमेशा दिखाता है कि छात्रों के हितों के लिए कोई भी समूह या समुदाय अपनी बड़ी से बड़ी और कीमती वस्तु, संपत्ति आदि को छोड़ देने से नहीं हिचकता। आचार्य विनोबा भावे के - 'भूदान यज्ञ' में बड़े-बड़े भू स्वामियों ने अपनी ख़ुशी से स्वयं को अपनी जमीनों से अलग कर लिया, लेकिन अपनी भूमि से इस प्रकार विस्थापित होने पर भी भू-स्वामियों को किसी भी प्रकार का दुख, क्षोभ आदि का अनुभव नहीं होता, बल्कि इससे विपरीत से संबंधित होने का भाव लाने में सहायक होता है।"[31]

पूंजीवाद एवं औद्योगीकरण के आने के साथ विकास के अवसर और पहले से उसकी गति भी बढ़ी। नयी अर्थव्यवस्था पुरानी सामंतवादी अर्थव्यवस्था से गुणात्मक रूप से काफी अलग थी क्योंकि इसमें एक ही स्थान पर अधिक से अधिक लोग एक ही प्रकार का कार्य करते थे। धीरे-धीरे उसके आस पास अन्य कार्य करने हेतु नए उपक्रम लगाये गए और इस तरह से उद्योगों का छोटा रूप एक बड़े क्षेत्र में स्वाभाविक रूप से अस्तित्व में आया। इस तरह यह स्पष्ट है कि ऐसे छोटे उद्योग तभी विकसित हुए होंगे, जब वहां पर बड़े उद्योग लगे होंगे, उनके भू-स्वामी वहां से विस्थापित हुए होंगे। इन उद्योगों में काम करने के लिए निश्चित ही दूसरी जगह से विस्थापित होकर ही आए होंगे। वैसे यह सही है कि विस्थापन की इस प्रकार की घटना अर्थव्यवस्था के विकास के लिए जरूरी थी, लेकिन इससे इतनी समस्यायें उत्पन्न होंगी इस बात से मनुष्य अभी तक परिचित नहीं था। विस्थापन जो अभी तक लगता था विकास के लिए अनिवार्य है वही अब ऐसी समस्याओं का कारण बन गई जिससे न केवल उन व्यक्तियों को परेशान होना पड़ रहा है जो इससे संबंधित है बल्कि उनको भी प्रभावित कर रहा है जो अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े थे। निश्चित ही ऐसी समस्याओं

के कारण के रूप में पूरी तरह से विस्थापन के तथ्य को नहीं माना जा सकता। ऐसी समस्याओं के लिए मूल रूप से कहीं न कहीं ना कहीं पूंजीवादी व्यवस्था और औद्योगीकरण जिम्मेदार हैं।

इसलिए आज के समय में विस्थापन की समस्या की विवेचना के लिए आवश्यक है कि हम सर्वप्रथम 'एलिनेशन' के बारे में जानें जोकि इस समस्या के निहितार्थों को सबसे अधिक सशक्त रूप से करने में पूरी तरह सक्षम हैं, के बारे में शाब्दिक व्युत्पति का विवेचन करें।

बीसवीं सदी में दर्शन, साहित्य, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, और मनोविज्ञान आदि क्षेत्र के बुद्धिजीवियों द्वारा फैशन की सीमा तक प्रयोग होने वाला बहु प्रचलित एकमात्र शब्द यदि कोई है तो वह विस्थापन ही है जो इस सदी के मानवीय यथार्थ चित्रण को सर्वाधिक मुख्य रूप में अभिव्यक्त करता है। इस शब्द के अधिक व्यापक एवं अनियंत्रित प्रयोग के कारण अक्सर लोग इसके विशिष्ट अर्थ एवं संदर्भ के प्रति लापरवाह होते दिखाई देते हैं। शायद यही इसके अधिकाधिक आकर्षण का कारण भी है। अर्नेस्ट गेलनर' ने बिलकुल सही कहा है कि किसी भी अवधारणा को सामान्य रूप से स्वीकार करना उसकी अर्थहीनता, अस्पष्टता विभिन्न संदर्भों में पूर्णतया अलग अर्थ रखने की क्षमता के साथ-साथ इस बात पर भी निर्भर करती है कि यह अपनी विवेचना में निरंतर एक अर्थ रखने का आभास देती है।

'एलिनेशन' शब्द की उत्पत्ति लैटिन की संज्ञा 'एलेनेसियों' से से हुई मानी जाती है जिसका अर्थ क्रिया एलिनेर से निकला माना जाता है। स्वयं 'एलिनेसन' शब्द की उत्पत्ति 'एलीनेस' शब्द से हुई है जिसका अर्थ 'अन्य से संबंधित या दूसरे की संपत्ति होना होता है।'[32] वेबस्टर डिक्शनरी इस शब्द को निम्नलिखित रुप से व्याख्या करती है-

क. हटाने पर विस्थापित करने की प्रक्रिया के रूप में

ख. स्वामित्व के हस्तांतरण: एक अन्य को अपनी संपत्ति देना

ग. वापस लेना या होना, हट जाना, परे होना अपनेपन की स्थिति से निषेध

घ. सामान्य प्रक्रिया से हटने या पड़े होने की स्थिति, सामान्य मानसिक क्रिया की अव्यवस्था

विस्थापन के विविध रूप

विस्थापन के अनेक विविध रूप जो स्पष्ट तौर पर प्रत्येक वर्ष देखा जाता है | इसके उन्नीसवीं शताब्दी से लेकर बीसवीं शताब्दी तक कई कारण हो सकते हैं, परन्तु विस्थापन और पलायन आज भी समाज में मौजूद है जो इस प्रकार है-

अंतर्राज्यीय या आंतरिक विस्थापन

अंतर्राज्यीय विस्थापन से अभिप्राय राष्ट्रीय सीमाओं के पार लोगों को जबरदस्ती आप्रवासन से है, जिन्हें अन्तर्राष्ट्रीय कानून में राष्ट्रीय सीमाओं के पार विस्थापित किया जाता है। शरणार्थी कोई भी वह व्यक्ति है जिसे अपना स्थाई निवास स्थान छोड़ने के लिए विवश किया जाता है। इन लाखों विस्थापित लोगों को आम तौर पर असहिष्णुता, उत्पीड़न, राजनीतिक हिंसा, सशस्त्र संघर्ष या मानव अधिकारों के उल्लंघन से बचने का प्रयास करना पड़ता है। शरणार्थी उस व्यक्ति के लिए भी प्रयोग में लाया जाता है जो स्वतंत्रता के पश्चात हुए विभाजन संबंधी घटनाओं के फलस्वरूप प्रजाति, धर्म, खास सामाजिक समूह की राष्ट्रीय सदस्यता या राजनीतिक या उत्पीड़न के भय के कारण अपनी राष्ट्रीयता के देश से बाहर हैं और इस भय के कारण उस देश की सुरक्षा स्वयं पाने में असमर्थ हैं। शरणार्थी जिन देशों में भाग कर जाते हैं और उनसे सुरक्षा की याचना करते हैं वे शरण के देश कहलाते हैं। इन शरण के देशों द्वारा निष्कासन या वापसी के निषेध पर विचार किया जाता है और इन शरणार्थियों को अन्य कई तरह के अधिकार प्रदान किए जाते हैं जैसे अप्रतिरोधकता और अन्य शरणार्थी अधिकार। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आंतरिक विस्थापन शब्द का प्रयोग उस व्यक्ति या समुदाय के लिए किया जाता है जो अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु या फिर किसी परिस्थितिवश देश की सीमा के अंदर कहीं अन्य स्थान पर विस्थापित होते हैं। "भारत

में पिछले 70 साल में सबसे ज्यादा आंतरिक विस्थापन विकास योजनाओं के कारण हुआ है। भारत में सन 1984 में पंजाब में हुए दंगे, सन 2002 में गुजरात में हुए सांप्रदायिक दंगों की वजह से कई बेगुनाह परिवारों को अपना मूल निवास छोड़कर अन्य देशों में विस्थापित होना पड़ा था।"[33]

राज्यान्तारिक या अस्थायी विस्थापन

'यह वह शरणार्थी व्यक्ति है जो अंतरराष्ट्रीय सीमा पार करता है या अन्य राज्यों में सुरक्षा मांगते हैं बल्कि अपनी राष्ट्रीय सीमाओं के अंदर और अपनी ही सरकार द्वारा सुरक्षा की मांग रखता है। राज्यन्तारिक विस्थापन के दो महत्वपूर्ण तत्व माने जाते हैं।

1. बाध्य या स्वैच्छिक स्थानांतरण
2. अपनी ही राष्ट्रीय सीमाओं के अंदर रहना जिन्हें देशीय विस्थापन भी कहा जाता है। जो अपने देश के अंदर होता है जैसे मनुष्य के मानव अधिकारों का उल्लंघन, मानवीय कष्टदायक दमनकारी शासन तथा सजातीय संघर्ष।

हिंदुस्तान के बंटवारे ने एक हादसे के रूप में भारतीय जनों के लिए जो समस्याएं पैदा की वे हमारे सामने विकट और बहुत भयावह हैं। जिसका परिणाम है- स्वतंत्रता, राष्ट्रीय स्वच्छता, सांप्रदायिकता जातीयता, प्रादेशिकता और आतंकवादी समस्याओं से आज हम घिरे हुए हैं। इतिहास के इस परिप्रेक्ष्य को कारगर ढंग से समझने के विचार से विभाजन के उपन्यास साहित्य को टटोलना बेहतर विकल्प हो सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि उस साहित्य पर दृष्टि डाला जाए जिसमें विभाजनजन्य स्थितियों के साथ ही विस्थापित जनों की मनोदशाओं और विसंगतियों का भावात्मक, संवेदात्मक और वैचारिक साक्ष्य मौजूद है। पलायन और विस्थापन की पीड़ा कितनी हृदय विदारक होती है। इसकी कल्पना मात्र से ही रूह काँप जाती है | इस दर्द का एहसास वही समझ सकता है, जो अपने घर से बेघर होता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि किसी व्यक्ति या समुदाय का अपने मूल स्थान से दूसरे स्थान पर कुछ निश्चित समय के लिए किया गया स्थानांतरण अस्थायी या स्थानीय विस्थापन कहलाता है। अस्थाई विस्थापन के अंतर्गत मुख्य रूप से मौसमी प्रस्थान गांव से शहर की ओर रोजगार की खोज में किया गया विस्थापन आदि का समावेश होता है।

अन्तर्राष्ट्रीय विस्थापन

इसके अंतर्गत एक देश की सीमा को पार करके दूसरे देश में पलायन करने की प्रक्रिया को अन्तराष्ट्रीय विस्थापन कहते हैं जो कि वैश्विक प्रक्रिया है इसका मूल कारण आर्थिक विकास माना जाता है। जब व्यक्ति अपने पारंपरिक मूल स्थान को त्यागता है तो उसके सामने अनेक समस्याएं उत्पन्न होती हैं। संयुक्त राष्ट्र के विभाजन से अंतरराष्ट्रीय विस्थापन एक गंभीर समस्या के रूप में आयी जिसका इतिहास साक्षी है। भारत, वर्मा, पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि जैसे देशों ने विभाजन से उत्पन्न विस्थापन का कड़वा घूंट पिया है। दुनिया के सभी देशों के लिए अंतरराष्ट्रीय विस्थापन एक गंभीर समस्या है। इस प्रकार के विस्थापन में "व्यक्तियों या व्यक्तियों के समूह हैं जो सशत्र, प्राकृतिक आपदा या मानवीय आपदा के कारण उत्पन्न परिस्थितियों के प्रभाव से बचने के लिए आवास छोड़ने या देश की अन्तराष्ट्रीय सीमा से बाहर पलायन करने को बाध्य होते हैं।"[34]

इतिहास की दृष्टि से देखने पर पता चलता है कि मानव संस्कृति का इतिहास और विस्थापन साथ साथ चलने वाली धाराएं हैं। विस्थापन कब हुआ यह अनुमान लगाना कठिन है परंतु रोजी-रोटी की तलाश में एक समुदाय का एक जगह से दूसरी जगह पर जाना युगों पुरानी घटना है। आज के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो हम कह सकते हैं कि समाज कई वर्गों में विभाजित है जिसके कारण उत्पन्न शोषण और उत्पीड़न से विस्थापन अनेक कारणों से देखने को मिलता है। जिनमें वैश्वीकरण, उपनिवेशवाद, आर्थिक संपन्नता-विभिन्नता मुख्य हैं। सामाजिक कारणों से भी विस्थापन की समस्या हमें देखने को मिलती है। विस्थापन

के सामाजिक कारणों में किसी भी देश का दरिद्र्पन व पिछड़ापन, शिक्षा का अभाव, सामाजिक कुरीतियाँ आदि हैं।

इसी प्रकार विस्थापन के आर्थिक कारण हमें देखने को मिलते हैं। आर्थिक अभाव और सुखद जीवन की तलाश में लोग विस्थापित होकर विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करते हैं। अंग्रेजों द्वारा भारतीय कुटीर उद्योगों को समाप्त कर दिया गया और बीसवीं शताब्दी में विज्ञान और औद्योगीकरण का सम्पूर्ण विकास पश्चिम के देशों में हुआ जिससे भारत के लोग वंचित रह गए और शिक्षित और अशिक्षित लोगों की आकांक्षाओं में वृद्धि होती गयी | विस्थापन के सामजिक कारणों की बाते करें तो यहा कहा जा सकता है कि भारत में आजादी के पूर्व दरिद्रता और पिछड़ापन था, शिक्षा का अभाव था, विभिन्न सामाजिक कुरीतियाँ हावी थी, जिससे लोगों में असंतोष की भावना आयी और लोग अपनी जड़ से अलग होकर देश के अलग-अलग हिस्से में विस्थापित हो गए।

सारांशतः हम कह सकते हैं कि- विस्थापन कट्टर और गैर राष्ट्रवादी ताकतों की राष्ट्रवादी ताकतों के साथ सीधी-सीधी जंग का प्रतिफलन है। विस्थापन घर या मात्र जमीन का टुकड़ा छोड़ने से नहीं है। यह घर के साथ पहचान, स्मृतियों की भरी-पूरी जमीन व अस्मिता के प्रश्न से जुड़ा होता हैं। विस्थापितों से जमीन का टुकड़ा ही नहीं छूटता, बल्कि उनकी आस्था के केंद्र और उनका अस्तित्व भी छूट जाता है। वह अपने ही परिवार अथवा सबंधों के मध्य विस्थापित अनुभव करता है।

संदर्भ

1. सिंह, सविन्द्र; भौतिक भूगोल; प्रयाग पुस्तक भवन प्रकाशन, 20-A, यूनिवर्सिटी रोड, पुराना कटरा, इलाहाबाद- 211002; पुनः संशोधित संस्करण, ग्यारहवां; 2020; पृ. 13.
2. वही, पृ. 14
3. मामोरिया, चतुर्भुज; एशिया का प्रादेशिक भूगोल; साहित्य भवन प्रकाशन, 3/20b, तुलसी सिनेमा, संजय नगर, पशुपति कॉलोनी, खंडारी, आगरा- 282003; द्वीतीय संस्करण: 1976; पृ. 11
4. वही, पृ. 12
5. वही, पृ. 11
6. सिंह, सविन्द्र; भौतिक भूगोल; प्रयाग पुस्तक भवन प्रकाशन, 20-A, यूनिवर्सिटी रोड, पुराना कटरा, इलाहाबाद- 211002; ग्यारहवां संस्करण: 2020; पृ. 24.
7. न्यू ऑक्सफोर्ड डिक्सनरी ऑफ़ इंग्लिश; न्यूयोर्क; ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; ग्रेट कैलेंडर स्ट्रीट ऑक्सफोर्ड, ox26op united kingdom, sixth edition, 2006; पृ. 929.
8. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद; भारतीय इतिहास भाग-1, अध्याय-1; पृ. 11.
9. नेहरु, पण्डित जवाहर; भारत की खोज; एन. सी. आर. टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय से प्रकाशित: नई दिल्ली 110016; संस्करण: 1996; पृ. 7.
10. शर्मा, वीरेंद्र प्रकाश; समाजशास्त्र का परिचय; पंचशील प्रकाशन, 4, चौरा रास्ता, नेहरु बाजार, फिल्म कॉलोनी, मोदीखाना, जयपुर- 302003; प्रथम संस्करण: 2004; पृ. 34.
11. वही, पृ. 38.
12. नेहरु, पण्डित जवाहर; हिन्दुस्तान की कहानी; सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, एन-77, कनोट सर्कस, नई दिल्ली- 110001; संस्करण: 2011, पृ. 377.
13. देशपांडे, भीमराव गोपाल; लोकमान्य तिलक (जीवन चरित्र); राजकमल प्रकाशन, 1-B, नेता जी सुभाष मार्ग, दरयागंज, नई दिल्ली- 110002; प्रथम संस्करण; 2000, पृ. 30-33.
14. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद; भारतीय इतिहास भाग-3, अध्याय-4; पृ. 362 से 367 तक.
15. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद; भारतीय इतिहास भाग-3, अध्याय-5; पृ. 382.
16. वही, पृ. 383
17. वही, पृ. 384

18. वही, पृ. 385.
19. वही, पृ. 386.
20. वही, पृ. 386.
21. वही, पृ. 387.
22. श्री कृष्णदास; स्वंतंत्रता संग्राम के 90 वर्ष इंडियन प्रकाशन, 36, पन्ना लाल रोड, जॉर्ज टाउन, इलाहाबाद- 211002; प्रथम संस्करण: 1946; पृ. 46.
23. चन्द्र, विपिन; आधुनिक भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद; अनामिका प्रकाशन, 52, जवाहर लाल नेहरु रोड, तुला राम बाग, जॉर्ज टाउन, इलाहाबाद-211002. द्वितीय संस्करण: 2005; पृ. 112
24. बंगाल विभाजन का इतिहास; https://www.jivniitihashindi,com. Date: 27-10-2021.
25. वही, Date: 27-10-2021.
26. वही, Date: 27-10-2021.
27. श्री कृष्णदास; स्वंतंत्रता संग्राम के 90 वर्ष; इंडियन प्रकाशन, 36, पन्ना लाल रोड, जॉर्ज टाउन, इलाहाबाद- 211002; प्रथम संस्करण: 1946; पृ. 68.
28. 1971 युद्ध: बांग्लादेश बनने की पूरी कहानी; https://navbharattimes.indiatimes.com/education. Date: 27-10-2021.
29. वही.
30. विस्थापन के कारण- प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक; https://sarkarifocus.com. Date: 19-10-2021.
31. पाण्डेय, अचला; विस्थापन का साहित्यिक विमर्श; लोक भारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी भवन, सिविल लाइन्स, प्रयागराज-211001; प्रथम संस्करण; 2019; पृ. 11.
32. वही, पृ. 12.
33. अर्नेस्ट गेलनर द्वारा पांचवें समाजशास्त्रीय सम्मलेन 1962, वाशिंगटन में प्रस्तुत शोध पत्र 'कांसेप्ट ऑफ़ सोसाइटी'.
34. https://www.drishtiias.com, Date: 18-10-2021.